केविसं , आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मैसूर

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23

कक्षा –12वीं हिन्दी (के आधार) अंक योजना / उत्तर संकेत

समय -3 घंटे **पूर्णांक –80**

सामान्य निर्देश :

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है |
- खंड अ में दिए गए वस्तुपरख प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए
- खंड ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिन्दु अंतिम नहीं हैं | ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं |
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएं
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्र.सं	उत्तर संकेत/ मूल्य बिंदु	अंक
	खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर)	
1	अपठित गद्यांश (i) (ग) सामाजिकता की भावना (ii) (ख) हमारे पैसे से प्रेम करने वाले (iii) (ग) अच्छा मित्र (iv) (ख) हमें हमारी कमियाँ नहीं बताता है (v) (ख) मुसीबत में साथ नहीं देता है (vi) (घ) हर समय प्रशंसा मिलती है (vii) (घ)अच्छे व्यक्ति को (viii) (ख) संज्ञा (ix) (ग) समाज + इक (x) (क) सरल	1x10=10
2	अपठित काव्यांश (i) ग भाग्यवाद को (ii) ग परिश्रम से (iii) ग भुजबल से (iv) ग उद्यमी प्राणी बनने की (v) ख निरुद्यमी अथवा	1x5=5

	(i) क मातृभूमि (ii) ख नीलांबर को (iii) क मातृभूमि की अमूल्य संतान को (iv) ख उपमा (v) ख रत्नाकर	
3	अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक से (i) क (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) घ	1x5=5
4	पठित काव्यांश (i) क (ii) ख (iii) घ (iv) ग (v) ग	1x5=5
5	पठित गद्यांश (i) ख (ii) ग (iii) ख (iv) ख (v) ग	1x5=5
6	वितान पुस्तक के पठित पाठों से (i) घ (ii) घ (iii) ख (iv) ग (v) क (vi) घ (vii) ग (viii) ग (ix) घ (x) घ	1x10=10
	खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)	

7	**किसी एक विषय पर लेख अपेक्षित** आरंभ 1 विषय-वस्तु 3 प्रस्तुति 1 भाषा 1	**6**
8	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) जहां कहानी का संबंध पाठक और लेखक से जुड़ता है वहीं नाटक लेखक , दर्शक, निर्देशक ,पात्र, श्रोता, एवं अन्य लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है। कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती है , नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। कहानी को आरंभ , मध्य और अंत के आधार पर विभाजित किया जाता है और नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है। कहानी में मंच सज्जा , संगीत , प्रकाश आदि का कोई महत्त्व नहीं है वहीं नाटक में मंच सज्जा, संगीत व प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।	**3 x 2=6**
	ख) रेडियो पर निश्चित अवधि पर निश्चित कार्यक्रम होते हैं | रेडियो का श्रोता घर बैठे बैठे कार्यक्रम सुनते हैं | मन उचटते ही रेडियो नाटक के श्रोता किसी और स्टेशन के लिए सूई घुमा सकता हैं इसलिए आम तौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक होती हैं|	
	ग) जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए | विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी उचित रूप रेखा बना लेनी चाहिए | विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए | विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए | अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए |	
9	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) समाचार लेखन की लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली; कथा लेखन शैली की उलटी; महत्त्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी शुरू में; कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य बाद में; इंट्रो या मुखड़ा, बॉडी, समापन।उल्टी पिरामिड शैली |	**4 x 2=8**

	ख) पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं। पूर्णकालिक - किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी। अंशकालिक (स्ट्रिंगर) - निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार। फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार किसी संस्था से जुड़े नहीं होते। जब से लिखते है तो इनका लेख कोई भी छाप सकता है और बदले में एक निशिचत राशि इन्हें भेज दी जाती है।	
	ग) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है फीचर लेखन का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है। फीचर में लेखक को अपनी राय दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती। फीचर में शब्दों की सीमा नहीं होती। पत्र पत्रकाओं में प्राय: 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।	
10	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) यह कविता अपनेपन की भावना में छिपी क्रूरता को व्यक्त करती है। सामाजिक उद्देश्यों के नाम पर अपाहिज की पीड़ा को जनता तक पहुँचाया जाता है। यह कार्य ऊपर से करुण भाव को दर्शाता है परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होता है। संचालक अपाहिज की अपंगता बेचना चाहता है। वह एक रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है ताकि उसका कार्यक्रम जनता में लोकप्रिय हो सके। उसे अपंग की पीड़ा से कोई लेना-देना नहीं है। यह कविता यह बताती है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते हैं। इस तरह दिखावटी अपनेपन की भावना क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाती है।	**3 x 2=6** **2**
	ख) -भाषा को सहूलियत से बरतने का तात्पर्य यह है कि भाषा का उचित प्रयोग करना। भाषा अनगिनत शब्दों का संग्रह है। शब्दों के अर्थ प्रसंगों के अनुरूप होनी चाहिए। व्यर्थ का शब्द जाल बुनने से पाठक को समझने में कठिनाई होती है ,इसलिए भाषा का प्रयोग सतर्कता से करना चाहिए। गलत शब्दों का प्रयोग भाषा को पेचीदा बना देता है। भाषा को सहूलियत से बरतने से ,सहजता से अर्थ सम्प्रेषण संभव है ।आलंकारिक या आडंबरपूर्ण भाषा से बचकर सरल,स्वाभाविक भाषा के प्रयोग की सीख ।	

	ग) कविता में कवि समय के गुजर जाने का एहसास तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास को तीव्र करने का जोश मनुष्य में उत्पन्न करना चाहता है ।दिन जल्दी- जल्दी ढलता है इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि जीवन की घडियाँ जल्दी बीत जाती है ।समय किसी के लिए नहीं रूकता। समय गतिशील एवं परिवर्तनशील है।	
11	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) बादल को कवि एक विल्पव के नायक का रूप दे रहा है और बादल राग को नेता का गर्जन अथवा क्रांति का आह्वान । सुख अत्थिर है जिसपर हमेशा दु:ख छाया रहता है । उसी प्रकार दुनिया के कष्ट भोगनेवाली जनता के मन में हमेशा विल्पव की चिंता बनी रहती है । धनिकों के आडम्बरपूर्ण महल असल में आतंक भवन है ।वहाँ जीने वाले हमेशा डरते-डरते जीते हैं/ इन सुविधा भोगी वर्ग से कभी भी कष्ट नहीं सहा जाएगा ।	2x2 =4
	ख) इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।	
	ग)आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। वर्षा समाप्त हो जाती है।प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है। आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।	
12	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं है। भक्तिन हर बात को अपने अनुकूल बना देने के लिए अति चतुर है । घर में इधर उधर पडा हुआ पैसा वह अपने पास रख लेती है । इसके अलावा वह परिस्थितियों के अनुरूप झूठ बोलने की कला में भी निपुण है ।	3 x2=6
	ख) बाज़ार एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है , जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है । सभी सामान जरूरी और आराम को बढावा देने वाला मालूम होता है । जादू की	

	सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती , बल्कि खलल ही डालती है । बाज़ार के जादू की जकड से बचने का एक ही सीधा सा उपाय है कि बाज़ार आओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो , तब बाज़ार न जाओ । मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला का फैला ही रह जाएगा । तब वह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा बल्कि कुछ आनंद ही देगा । मन भरा रहकर आवश्यकता के समय बाज़ार जाने पर बाज़ार के जादू से हम बच सकते हैं ।	
	ग) लुट्न पहलवान का जीवन उतार-चढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुख-सुख से उसे दो-चार होना पड़ा। सबसे पहले उसने चाँद सिंह पहलवान को हराकर राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान और उसके दोनों बेटों को राजदरबार से अवकाश दे दिए। गाँव में फैली बीमारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। एक दिन पहलवान भी चल बसा और उसकी लाश को सियारों ने खा लिया। इस प्रकार दूसरों को जीवन संदेश देने वाला पहलवान स्वयं खामोश हो गया।	
13	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** क) जो लोग लड़कों के नंगे शरीर ,उनकी उछल कूद, उनके शोर-शराबे और उसके कारण गली में होने वाली कीचड़ से चिढ़ते थे, वे लड़कों की टोली को मेंढक मंडली कह कर पुकारते थे| लेकिन बच्चों की एक टोली अपने आप को इंदरसेना कहती थी क्योंकि उनके अनुसार वे इंद्र की सेना के सैनिक हैं और उसी के लिए लोगों से पानी मांगते हैं ताकि इंद्र बादलों के रूप में बरस कर सब को पानी दे सके ।जो लोग यह विश्वास करते थे कि इस तरह करने से इंद्र भगवान प्रसन्न होंगे और वर्षा करेंगे वे भी इन बच्चों को इंद्रसेना कहते थे|	2x2 =4
	ख) शिरीष का वृक्ष अवधूत की भांति बसंत के आने से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी परेशानी के पुष्पित होता रहता है। जब ग्रीष्म ऋतु में सारी पृथ्वी अग्नि कुंड की तरह जलने लगती है, लू के कारण हृदय भी सूखने लगता है तो उस समय भी शिरीष का वृक्ष कालजयी अवधूत की तरह जीवन में विजेता होने का प्रदर्शन कर रहा होता है। वह संसार के सभी	

	प्राणियों को धैर्यशील , चिंता रहित व कर्तव्य शील बने रहने के लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि लेखक इसे अवधूत की तरह मानता है।	
	ग) यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है ।इसमें व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा की जाती है ।यह केवल माता-पिता के सामाजिक स्तर का ध्यान रखती है ।व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका श्रम विभाजन होना अनुचित है । जाति प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय से बांध देती है। व्यवसाय उपयुक्त हो या अनुपयुक्त, व्यक्ति को उसे ही अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती भले ही भूखा क्यों न मरना पड़े !	